गांधीवादी विचारधारा- स्वराज

For P.G.Sem-3,Unit-4,CC-14

गांधी जी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में हुआ था। गांधीजी के विचार विविध स्रोतों का एक संश्लेषण थे। विभिन्न धर्म, भागवत गीता, उपनिषद, अंग्रेजी लेखक और दार्शनिक जॉन रस्किन, रूसी लेखक लियो टॉलस्टॉय, अमेरिकी दार्शनिक हेनरी थोरो और प्राचीन यूनानी दार्शनिक सुकरात और प्लेटो से गांधीजी प्रभावित थे। 'हिंद स्वराज' को छोड़कर गांधी ने कभी कोई दार्शनिक ग्रंथ नहीं लिखा।

- स्वराज दो हिंदी शब्दों स्व (स्वंय) और राज (नियम) का एक संयोजन है जिसका अर्थ है स्वयं पर शासन करना। गांधीजी ने इस विचार को अपनी जन अपील से लोकप्रिय बनाया हालांकि इस अवधारणा का उपयोग अन्य स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा भी किया गया था। दादा भाई नौरोजी ने 1906 के कोलकाता में कांग्रेस अधिवेशन में 'स्वराज' को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस का लक्ष्य घोषित किया था। बाल गंगाधर तिलक ने भी खुले तौर पर घोषित किया था कि 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और मैं इसे लेकर रहूंगा।' दोनों नेताओं के मन में एक दूसरे के लिए बहुत सम्मान होने के बावजूद स्वराज हासिल करने के उनके तरीकों को लेकर मतभेद थे। भारत में स्वराज प्राप्त करने के बाद ब्रिटिश संस्थाओं को बनाए रखने की इच्छा रखने वाले चरमपंथियों के विपरीत गांधी ने भारत में संसदीय लोकतंत्र जैसी पश्चिमी संस्थाओं का समर्थन नहीं किया। वह स्वराज प्राप्त करने के अपने साधनों में भी भिन्न थे। गांधी जी ने अंग्रेजों से लड़ने के लिए नैतिकता और सच्चाई के मार्ग का पूरी तरह से समर्थन किया जबकि तिलक ने तर्क दिया की चूंकि भारत में ब्रिटिश शासन अपने स्वभाव से अनैतिक था इसलिए इसे

उखाड़ फेंकने के लिए अनैतिक साधनों का उपयोग करने में कोई बुराई नहीं थी।

- स्वतंत्रता या स्वतंत्रता जैसी अंग्रेजी शब्दों का उपयोग करने के बजाय गांधी ने स्वराज का उपयोग करना पसंद किया। गांधी पश्चिमी संस्थाओं को बनाए रखना नहीं चाहते थे क्योंकि यह अंग्रेजों के बिना अंग्रेजी शासन के बराबर होगा। अपनी पुस्तक 'हिंद स्वराज' में गांधी ने घोषणा की कि आप बाघ की प्रकृति चाहते हैं लेकिन बाघ नहीं यानी आप भारत को अंग्रेजी बना देंगे और जब यह अंग्रेजी हो जाएगी तो इसे 'हिंदुस्तान' नहीं बल्कि इंग्लैंड कहा जाएगा। यह वह स्वराज नहीं है जो मैं चाहता हूं।'
- गांधी जी की योजना में स्वराज का अंग्रेजी शब्द स्वतंत्रता से अलग अर्थ है स्वतंत्रता एक लापरवाह रवैए को इंगित करती है जहां व्यक्ति अपनी इच्छा अनुसार कुछ भी कर सकता है दूसरी ओर स्वराज व्यक्तियों पर आत्म-अनुशासन और नियंत्रण का कर्तव्य थोपता है। स्वराज के विचार का पता बृहदारण्यक उपनिषद से लगाया जा सकता है जहां स्वराज का अर्थ है 'नैतिक आत्म की स्वायत्तता और इंद्रियों पर सख्त नियंत्रण'।
- गांधी के स्वराज के विचार ने जनता के साथ तालमेल बिठाया और जाति वर्ग, क्षेत्र और धर्म की चुनौतियों के बावजूद पूरे भारत में लोगों के बीच लोकप्रिय हो गया। स्वराज की गांधी की दृष्टि नैतिकता और इसके केंद्र में व्यक्ति पर केंद्रित थी। व्यक्ति को अपने इंद्रियों को नियंत्रित करने की आवश्यकता है ताकि त्याग और आत्म-साक्षात्कार पर ध्यान केंद्रित करने के लिए धन और शक्ति की खोज को दूर रखा जा सके।
- स्वराज को चार अर्थो से समझा जा सकता है जो स्वराज की चार अलग-अलग विशेषताओं को व्यक्त करते हैं लेकिन वे पूरक है।

- पहला ,स्वराज ब्रिटिश शासन से राष्ट्रीय स्वतंत्रता की मांग थी। भारत में सभी नेताओं और स्वतंत्रता सेनानियों में आम सहमति थी कि ब्रिटिश शासन को जाने की जरूरत है और भारत को स्वशासन प्राप्त करना चाहिए। स्वराज का अर्थ व्यापक अर्थों में मानव मुक्ति था।
- दूसरा, स्वराज का मतलब राजनीतिक स्वतंत्रता भी था लेकिन इसका मतलब पश्चिमी लोकतंत्रों का मॉडल नहीं था। गांधी जी का अर्थ था- रामराज्य अर्थात शुद्ध नैतिक अधिकार पर आधारित लोगों की संप्रभुता। उनका मानना था कि समय के साथ लोग स्वयं विनियमित हो जाएंगे और उन्हें राजनीतिक प्रतिनिधियों की आवश्यकता नहीं होगी। गांधी जी थोरों के इस विचार से प्रभावित थे कि सबसे अच्छी सरकार वह है जो कम से कम शासन करती है। गांधी जी ने जिम्मेदार और सक्रिय नागरिकों का समर्थन किया जो लोकतंत्र को मजबूत करेंगे। नागरिक न केवल अपने प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे बल्कि उनके द्वारा सत्ता के किसी भी संभावित दुरुपयोग पर रोक लगाने के रूप में कार्य करेंगे। उनका मानना था कि सत्ता को नियंत्रित करने के तरीकों के बारे में जनता को शिक्षित करके स्वराज प्राप्त किया जाएगा। वे जनता के अधिकारों को बजाए नागरिकों के कर्तव्यों पर अधिक जोर देते थे।
- तीसरा, स्वराज का एक आर्थिक आयाम भी था। पश्चिमी सभ्यता की गांधी की आलोचना ने भारतीय वास्तविकताओं पर आधारित आर्थिक विकास की एक वैकल्पिक मॉडल का मार्ग प्रशस्त किया। गांधी ने तर्क दिया कि 'चरखा' और 'खादी' भारत के आर्थिक भविष्य को परिभाषित करेंगे। 'स्वदेशी' पर जोर देकर गांधी ने ग्रामीण हस्तशिल्प के पुनरुद्धार का भी समर्थन किया। गांधी जी श्रम बढ़ाने वाली मशीनरी के खिलाफ थे। हजारों लोग मशीनों के

कारण अपना रोजगार को खो देते जो उस समय के भारत में गरीबी और बेरोजगारी को और बढ़ा देता। ग्राम केंद्रित अर्थव्यवस्था पर गांधी जी का विशेष ध्यान था क्योंकि उनका मानना था कि भारत का भविष्य इसके गांव मे है। गांधी के स्वराज का उद्देश्य सभी गरीबों और वंचितों की बेहतरी के लिए सकारात्मक स्थिति प्रदान करना था।

- चौथा, गांधी के स्वराज के विचार का एक आध्यात्मिक आयाम था जिसे आत्म नियंत्रण या आत्म नियमन भी कहा जाता है। यह वास्तविक स्वतंत्रता प्राप्त करने के लिए आंतरिक बाधाओं को दूर करने को संदर्भित करता है। पश्चिमी सभ्यता माया, लालच, भौतिकवाद और भ्रम का प्रतीक था जो वास्तविक सुख और स्वतंत्रता की ओर नहीं ले जा सकती। गांधी जी ने अद्वैत, स्वशासन और सत्य का समर्थन किया। इसका मतलब था कि सभी मनुष्य समान पैदा होते हैं और उनकी आत्मा एक दूसरे के समान होती है। चूंकि व्यक्ति गांधी के स्वराज की अवधारणा के केंद्र में था, इसलिए सभी लोगों के लिए स्वराज के सही अर्थ को प्राप्त करने के लिए स्व- नियमन का प्रयोग करना आवश्यक था।